(1) सूरदास का वात्सल्य वर्णन ?

उ:-> हिन्दी के कृष्ण काव्य के कवियों में सूरदास सर्वश्रेष्ठ कवि माने जाते हैं। वस्तुतः जो स्थान राम काव्य के कवियों में तुलसी दास का है ठीक वैसा ही स्थान कृष्ण काव्य में सूरदास का है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने सूरदास को अष्टछाप का शीर्ष कवि माना है तुलसी के तरह सूर का साहित्य बहुत व्यापक नहीं है और न तुलसी के तरह सूर ने अपने आराध्य कृष्ण का विस्तृत वर्णन ही किया है। पर, सूर ने कृष्ण के वात्सल्य और शृंगार लीलाओं का जितना विस्तृत व मार्मिक वर्णन किया है वह महाकवि सूर से बहुत आगे की चीज है। निष्कर्ष मात्र इतना ही है कि सूर ने सिर्फ कृष्ण के उन दो पक्षों को ही उजागर किया है। वात्सल्य के वर्णन में तुलसी तो क्या सूर जैसा कवि विश्व साहित्य में नहीं है। सूर के पहले हिन्दी कथा साहित्य में वात्सल्य रस का अलग से उल्लेख नहीं हुआ था। सूर ने ही वात्सल्य को एक रस विशेष के रूप में प्राण प्रतिष्ठित किया। इसीलिए सूर वात्सल्य रस के जनक माने जाते हैं। संस्कृत साहित्य में कालिदास ने सिर्फ एक छंद वात्सल्य रस से पूर्ण लिखा है। अंग्रेजी साहित्य में लांगफेलो ने शिशु के गुणों का थोड़ा बहुत वर्णन किया है और बांग्ला साहित्य में रवीन्द्र नाथ टैगोर ने बाल वर्णन किया है। किन्तु उक्त सभी कवियों के वर्णन में न तो सूर जैसी सरलता है न व्यापकता और न स्वाभाविकता। इनके वर्णन सिर्फ नाम मात्र के हैं। यही कारण है कि सूर का बाल वर्णन अगर उनके साहित्य से अलग कर दिया जाए तो सूरदास का व्यक्तित्व ही लुप्त हो जाएगा। इनके बाल वर्णन

की पहली विशेषता यह है कि इनके बालक कृष्ण भारतीय पारिवारिक और सामाजिक परिवेश के ही कृष्ण लगते हैं। हर घर में कृष्ण जैसी बालक अपनी लीलाओं से माँ-बाप, संगी-साथी को खुश करते नजर आते हैं। वास्तविकता यह है कि सूर के बालक कृष्ण में मानवीय तत्व ही अधिक है। बाललीला करते समय कहीं से भी असाधारण या देवता नहीं लगते। कृष्ण की लीलाओं के साथ जो साधारणीकरण हो जाता है, सूर की यही विशिष्ट सफलता है। धीरे-धीरे बढ़ने वाली उम्र के साथ-साथ बालक की जो प्रवृत्ति होती है, बचपन से किशोरावस्था तक जो बालक की लीला होती है उनका बहुत ही स्वाभाविक और मनोवैज्ञानिक चित्रण सूर ने ~~आपकी~~ अपनी बंद आँखों से किया है। बालक कृष्ण के लिए माता यशोदा और पिता नन्द की हृदय में जो वात्सल्य की भावना उठती है उनका सूक्ष्म चित्रण कर सूर ने वात्सल्य रस को पूर्णता दे दी है। इस तरह सूर के वात्सल्य वर्णन में माँ-बाप, बालक तीनों का मार्मिक चित्रण हो उठा। सूर का बाल-वर्णन एकांगी नहीं है। बालक के आंतरिक इच्छाओं और चेष्टाओं का सूक्ष्म से सूक्ष्म ~~सूर~~ अंकन सूर ने किया है। इनके बाल-वर्णन दो तरह से देखा जा सकता है—

(क) बालक कृष्ण का वर्णन।

(ख) कृष्ण की बाल प्रवृत्तियों का वर्णन।

कृष्ण का सुन्दर मुख कमल से नयन, लाल अधर, घुंघराले काले लहराते बाल, मुकुट

पिताम्बर, बाँसुरी, गुंजन की माला, नृत्य, मुद्रा आदि के वर्णन में बाल कृष्ण का रूप का वर्णन हुआ है। सूर का महत्त्व कृष्ण की बाल प्रवृतियों में है। इन प्रवृतियों के वर्णन में कहीं स्थिर-चित्र का अंकन हुआ है तो कहीं गतिशील-

"यसोदा हरि पालने झुलावै" यह स्थिर चित्र है। "सिखवति चलन जसोदा मैया।" यह गतिशील-चित्र है। एक सोते हुए बालक की चेष्टा चेष्टाओं का तथा चलने के लिए मचलते हुए बालक की मुद्राओं का जितना स्वाभाविक वर्णन और क्या हो सकता है। इसका कारण यह है कि सूर को बाल मनोविज्ञान की अच्छी जानकारी रही है। सामान्य बालक के तरह सूर के कृष्ण चाँद को खिलौना मान बैठते हैं। बालक में दूसरे बालक की बराबरी करने की प्रवृति रहती है। सूर के कृष्ण भी अपने दूसरे साथियों की तरह बड़े-बड़े चोटी चाहते हैं। स्पर्धा की स्वाभाविक प्रवृति सूर ने की है-

"मैया कबहिं बढ़ैगी चोटी।"

माता यशोदा मुश्किल मुश्किल में पड़ जाती है। वह बालक की चंचलता, अपने बड़े भाई, बलदेव के साथ झगड़ना, खेल में हार-जीत के प्रसंग आदि कितने ऐसे स्वाभाविक संदर्भ हैं जिनमें सूर ने बालक कृष्ण के माध्यम से सार्थक कर दिया है। कृष्ण तोतली बोली में माँ यशोदा से बलदेव की शिकायत करते हैं या माखन नहीं खाने का बहाना करते हैं-

"मैया मैं नहि माखन खायो।"

इस समय स्वाभाविक चित्रण में सूर अद्वितीय कवि लगते हैं। बालक कृष्ण के साथ लीला

दिखाकर बालकों के वातावरण का सजीव चित्र खींचा है। कृष्ण दाव हार गये हैं और वे अपने साथी को दाव देना नहीं चाहते हैं; कृष्ण की यह प्रवृति सभी बालकों में होती है। खेल को लेकर बालकों में झगड़े का वर्णन सूर ने बहुत ही सरल व विश्वासनीय ढंग से किया। माखन चुराने, मिट्टी खाने या गोपियों को परेशान करने के कारण उनके वाले क्रोध का वर्णन करके सूर ने वात्सल्य रस को अधिक प्रभाव प्रद बना दिया है। गाय चराने के लिए कृष्ण जा रहे हैं संध्या से पहले ना लौटना, कृष्ण को देर हो जाना इस प्रसंगों में एक माँ की हृदय की आशा, या निराशा, चिंता या प्रसन्नता का सफल वर्णन सूर ने किया है। पहली बार छोड़कर कृष्ण मथुरा गये हैं यशोदा और नन्द का विरह का वर्णन पत्थर दिल को भी पिघला देने वाला है। अत: हम ~~कह सकते हैं~~ विश्वास पूर्वक कह सकते हैं कि सूरदास वात्सल्य रस के अप्रतिम (जनक) कवि हैं।